भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण

संगीत द्वारा उत्पन्न आनन्ददायिनी अनुभूति को प्राप्त करने के लिए उसमें स्वर तथा लय प्रतिस्थापना हेतु विभिन्न वाद्यो का प्रयोग होना अत्यावश्यक होता है। वस्तुतः यह वाद्य संगीत की महत्ता ही है कि इसमें बिना किसी अन्य कला की सहायता के श्रोताओं को काफी लम्बे समय तक बाँधे रहने की शक्ति होती है। अत्यन्त प्राचीन काल से भारतीय संगीत के साथ जिन विभिन्न वाद्यों का प्रयोग किया जाता रहा है उसे मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया जाता रहा है–

1. तत्
2. सुषिर
3. घन
4. अवनद्ध

1. तत्–वे वाद्य जिनमें तार के आन्दोलन या कम्पन द्वारा स्वरोत्पत्ति की जाती है। इन वाद्यों में तारों में आन्दोलन या कम्पन मिजराब द्वारा किया जाता है। मिजराब तार की एक विशेष अँगूठी होती है जिसे तर्जनी अँगुली पर पहनकर तार को छेड़ा जाता है। इसके अन्तर्गत सितार, सरोद, वीणा आदि वाद्य आते हैं। तत् वाद्य के अन्तर्गत वितत् प्रकार के वाद्य भी आते हैं जिनमें स्वरोत्पत्ति गज के द्वारा या कमानी के द्वारा होती है जैसे–वायलिन, इसराज, सारंगी इत्यादि।

2. सुषिर–वे वाद्य जिनमें स्वरोत्पत्ति मुँह से फूँककर या हवा के दबाव या जोर से होती है। इसके अन्तर्गत मुँह से फूँक कर स्वरोत्पत्ति करने वाले वाद्य बाँसुरी, शहनाई, माउथ आर्गन तथा हवा के दबाव या जोर से स्वरोत्पत्ति करने वाले वाद्य हारमोनियम आदि आते हैं।

3. घन वाद्य–ऐसे वाद्य जिनमें स्वरोत्पत्ति लकड़ी या किसी अन्य धातु से उत्पन्न होती है घन वाद्यों के अन्तर्गत आते हैं जैसे–घण्टा, घुँघुरू इत्यादि।

4. अवनद्ध वाद्य–ऐसे वाद्य जिनके मुँह पर चमड़ा मढ़ा रहता है तथा स्वरोत्पत्ति हाथ या लकड़ी के आघात द्वारा की जाती है, अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं जैसे–तबला, पखावज, ढोलक, ढोल, नगाड़ा इत्यादि।

Scanned with CamScanner

महर्षि भरत तथा दत्तिल ने अपने-अपने ग्रन्थों (महर्षि भरत द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' तथा दत्तिल द्वारा रचित 'दत्तिलम') में भारतीय वाद्यों को चार श्रेणियों में ही विभाजित किया है—तत्, आनद्ध, धन एवं सुषिर। भरत ने अपने ग्रन्थ में लिखा है—

ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च।
चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम्॥

इसी प्रकार चारों प्रकार के वाद्यों के लक्षण के सन्दर्भ में उन्होंने कहा है—

ततं तन्त्रीकृतं ज्ञेयमवनद्धं तु पौष्करम्।
घनं तालस्तु विज्ञेयः सुषिरो वंश उच्यते॥

इस प्रकार महर्षि भरत के अनुसार तत-तन्त्रीवाद्य, अवनद्ध—पुष्कर वाद्य, धन-ताल वाद्य तथा सुषिर—वंशी वाद्य है। महर्षि भरत के ग्रन्थ से यह भी संकेत मिलता है कि उस समय समस्त वाद्यों को आतोद्य भी कहा जाता था।

नारद मुनि ने वाद्यों के तीन प्रकार ही बताये—आनद्ध, तत एवं घन। जबकि कोहल के मतानुसार ये पाँच हैं ऐसा प्रतीत होता है कि कोहल ने कण्ठ ध्वनि को, जो कि शरीरज है, ईश्वर द्वार निर्मित, प्रदत्त एवं नैसर्गिक है, वाद्य ध्वनि के अन्तर्गत शामिल कर लिया है। इस प्रकार कुछ ग्रन्थकारों के अनुसार वाद्यों के तीन प्रकार हैं। कुछ के अनुसार वाद्यों के चार प्रकार तथा कुछ अन्य के अनुसार वाद्यों के पाँच प्रकार हैं। वाद्यों के पाँच प्रकार मानने वाले के अनुसार—जो पाँच प्रकार की संगीतात्मक ध्वनियाँ—नखज, वायुज, चर्मज, लोहज तथा शरीरज होती है, उसके आधार पर वे वाद्यों को वर्गीकृत करते हैं, जैसे—वीणा आदि वाद्य नखज, वंशी आदि वाद्य वायुज, मृदंग आदि वाद्य चर्मज, ताल मंजीरा आदि वाद्य लोहज तथा कण्ठ ध्वनि शरीरज होती है। इस प्रकार इन उपरोक्त पाँच प्रकार की ध्वनियों को उत्पन्न करने वाले वाद्यों को 'पंचमहावाद्यानि' कहा गया है।

यहाँ पर इस तथ्य का उल्लेख करना आवश्यक है कि महर्षि भरत ने वाद्यों का जो चतुर्विध वर्गीकरण तथा उनका नामकरण प्रस्तुत किया है उसे बाद के संगीताचार्यों ने लगभग ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया है केवल दो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं—इनमें से एक—अवनद्ध के स्थान पर वितत शब्द का प्रयोग तथा दूसरा—ततानद्ध नाम का नया वर्गीकरण। वितत शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग तानसेन तथा उसके बाद के संगीतकारों द्वारा मिलता है। इस प्रकार तानसेन ने तत, वितत, धन सुषिर इन चार श्रेणियों में वाद्यों को वर्गीकृत किया। तानसेन ने अपने ग्रन्थ 'संगीत सार' में 'चरम मढ्यो जाको मुखर वितत सु कहे बखान'' इन पंक्तियों का उल्लेख किया है जिससे यह स्वतः स्पष्ट होता है कि प्राचीन ग्रन्थकारों (भरत, दत्तिल)

Scanned with CamScanner

ने जिसे अवनद्ध वाद्य कहा उसी को तानसेन ने वितत कहकर संबोधित किया।

परन्तु यहाँ यह प्रश्न उठता है कि अवनद्ध के स्थान पर वितत शब्द का प्रयोग कैसे और किस प्रकार हुआ? विभिन्न स्रोतों के आधार पर जो तथ्य हमें दृष्टिगत होते हैं वह इस प्रकार है—तानसेन रचित संगीत चूड़ामणि में दो बार वितत शब्द का प्रयोग अवनद्ध के स्थान पर हुआ है जैसे—

(1) ततं च वितत चैव घनं सुषिरमेव च।
गानं चैव तु पञ्चैतत् पञ्चशब्दाः प्रकीर्तिताः॥

(2) ततं च तन्त्रितं विद्याद् वितत मुखवादनम्।
घनं च कांस्यतालादि तु (सु) षिरं वायुपूरितम्॥

इस प्रकार उपरोक्त श्लोक में वितत शब्द का दो बार प्रयोग देखकर ऐसा लगता है जैसे कि मानो वितत शब्द का प्रयोग पाली भाषा के प्रभाववश हुआ हो क्योंकि किसी भी पंक्ति में 'तत वितत धन सुषिर' का गायन जितना आसान व सरल होगा वही 'तत अवनद्ध धन सुषिर' के गायन में अच्छी खासी मानसिक कठिनाइयों को पार करना होगा। अतएव मध्ययुग तक आते-आते दो प्रकार की धारा प्रवाहित हुई एक ओर जहाँ सांगीतिक संस्कृत ग्रन्थों में महर्षि भरत की परिपाटी (अवनद्ध शब्द का प्रयोग) विकसित हुई वहीं दूसरी ओर साधारण बोलचाल की भाषा में वितत शब्द का प्रयोग किया गया।

नये वर्गीकरण की आवश्यकता

आज वर्तमान समय में जबकि नये-नये वाद्यों का विकास व उनका प्रचलन बढ़ रहा है अतएव ऐसे समय में प्राचीन ग्रन्थकारों व संगीतचार्यों द्वारा वर्गीकृत वाद्यों की उपादेयता पर स्वयमेव ही प्रश्नचिन्ह लग जाता है। यह समस्या उस स्थिति में और भी भयंकर हो जाती है जबकि हम विभिन्न देशों की सांस्कृतिक निधियों के सम्पर्क में आकर उन विभिन्न देशों के वाद्यों से अवगत होते हैं तब ऐसे वाद्यों को यदि हम अपने चतुर्विध वर्गीकरण में रखना चाहे तो उन्हें किस वर्ग में रखेंगे यह निश्चित करना काफी कठिन हो जाता है।

इतना ही नहीं यदि हम अत्यन्त प्राचीन काल से भारतीय संगीत के साथ प्रयोग किये जाने वाले वाद्य उपंग की बनावट पर ध्यान दें तो एक ओर इसमें जहाँ चमड़ा प्रयुक्त होता है वहीं तार भी लगा होता है तथा स्वरोत्पत्ति चमड़े से न होकर तार द्वारा होती है। साथ ही तार द्वारा स्वरोत्पत्ति से लय और ताल का निर्वहन होता है ऐसी स्थिति में इस वाद्य (उपंग) को चमड़ा प्रयुक्त होने के कारण तथा लय व ताल का निर्वहन करने के कारण अवनद्ध ताल वाद्यों की श्रेणी में रखा जाये या

Scanned with CamScanner

वाद्य में तार का प्रयोग तथा तार द्वारा स्वरोत्पत्ति होने के कारण तन्त्रीवाद्यों की श्रेणी में रखा जाये यह निश्चित करना काफी कठिन हो जाता है अतएव ऐसी स्थिति में एक नये वर्गीकरण की आवश्यकता का जन्म होना अवश्यम्भावी हो जाता है। इस प्रकार के वाद्यों के लिए विमानवत्थु में आतत-वितत नाम के एक नये वर्ग का उल्लेख किया गया है। बाद के 'संगीत पाठ' नामक ग्रन्थ में इसी आतत-वितत नामक नये वर्ग को ततानद्ध कहकर संबोधित किया गया।

इसी प्रकार वाद्यों के नये वर्गीकरण की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में हम तरंग वाद्यों का उद्धरण देना चाहेंगे जिनमें जलतरंग ऐसा वाद्य है जिसे बनावट की दृष्टि से (इस वाद्य के प्यालो में चीनी मिट्टी की सामग्री प्रयुक्त होती है) धन वाद्य तथा डण्डी से प्रहार कर बजाने के कारण धन वाद्यो की श्रेणी में रखा जा सकता है किन्तु जैसा कि सर्वविदित है धन वाद्य ताल प्रधान वाद्य होते हैं अतएव जलतरंग वाद्य द्वारा लय एवं ताल का निर्वहन नहीं होता बल्कि इस वाद्य द्वारा स्वर वाद्यो की तरह राग, गत, गीत आदि का वादन किया जाता है अतएव इस दृष्टि से इसे धन वाद्यो की श्रेणी में रखना उचित नहीं जान पड़ता। आज जलतरंग की तरह अनेक तरंग वाद्य प्रचलन में आ गये जैसे—काष्ठ-तरंग, घुँघुरू-तरंग, घण्टा-तरंग, शीश-तरंग, जल-तरंग, मृदंग-तरंग, तबला-तरंग आदि। बनावट की दृष्टि से अन्तिम दो वाद्य मृदंग-तरंग तथा तबला-तरंग को छोड़कर शेष अन्य वाद्य धन वाद्यों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं तथा मृदंग-तरंग व तबला-तरंग जिनका मूल ढाँचा अवनद्ध वाद्य की तरह हैं। इस प्रकार उपरोक्त तरंग वाद्यो का ढाँचा या तो धन वाद्य की तरह है या अवनद्ध वाद्य की तरह किन्तु इनका प्रयोग लय एवं ताल हेतु नहीं किया जाता वरन् इनका प्रयोग स्वरोत्पत्ति हेतु किया जाता है अतएव ऐसा प्रतीत होता है कि तरंग वाद्यो हेतु एक नया वर्ग होना चाहिए जिनमें कि इन वाद्यो को रखा जाये अर्थात् **एक ऐसा वाद्य जो बनावट में धन या अवनद्ध** वाद्यो की तरह होते हैं तथा जिनमें स्वरोत्पत्ति हाथ के आघात द्वारा या डण्डी के प्रहार द्वारा होती है किन्तु उनसे लय एवं ताल की अपेक्षा विभिन्न रागों, गतो व गीतों का वादन होता है तरंग वाद्य कहे जाते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के पश्चात् हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वाद्यो के कुल छह वर्ग होने चाहिए—

1. तत वाद्य (तन्त्री वाद्य-सितार, सरोद, वीणा आदि)
2. आनद्ध वाद्य (तबला, मृदंग, ढोलक, ताशा, नगाड़ा आदि)
3. ततानद्ध वाद्य (उपंग)
4. घन (घण्टा, घुँघरू आदि)
5. सुषिर (शहनाई, बाँसुरी, माउथ आर्गन आदि)
6. तरंगवाद्य (जल-तरंग, काष्ठ तरंग, तबला-तरंग आदि)

Scanned with CamScanner

अब यदि उपरोक्त छः वर्गों को सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तो इनके भी कई उपवर्ग किये जा सकते हैं यथा–तत वाद्यो को ही अकेले 1. वादन क्रिया के आधार पर 2. बनावट के आधार पर तथा 3. तत वाद्यो को वादन हेतु वाद्यो के रख-रखाव के आधार पर ही कई उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है। यदि वादन-क्रिया के आधार पर इन्हें विभाजित किया जाये तो इनके चार उपवर्ग हो सकते हैं।

1. उँगलियों से छेड़कर बजाये जाने वाले वाद्य–स्वर मण्डल, तम्बूरा आदि।
2. मिजराब से बजाये जाने वाले वाद्य–सितार, सरोद आदि।
3. गज से रगड़ कर बजाये जाने वाले वाद्य–इसराज, सारंगी आदि।
4. डण्डी के प्रहार से बजाये जाने वाले वाद्य–शन्तूर आदि।

बनावट के आधार पर तत वाद्यो के छः उपवर्ग किये जा सकते हैं यथा–

1. लम्बी गरदन वाले वाद्य–सितार, इसराज, तम्बूरा, वीणा आदि।
2. छोटी गरदन वाले वाद्य–सारंगी, वायलिन आदि।
3. एक या दो तुम्बायुक्त वाद्य–तंजोरीवीणा के अलावा सभी प्रकार की वीणाएँ, तम्बूरा, सितार आदि।
4. तबली के स्थान पर चमड़ा से मढ़े हुए वाद्य–सारंगी, इसराज, सरोद, रवाब आदि।
5. ठोस सीधी तथा घुमावदार लकड़ी से बने वाद्य–कुछ प्राचीन भारतीय वीणाएँ आदि।
6. चपटे अथवा चौकोर सन्दूक की भाँति बने वाद्य–स्वरमण्डल, शन्तूर आदि।

वादन क्रिया तथा बनावट के साथ साथ तत् वाद्य के वादन हेतु रखने की स्थिति के आधार पर भी इन्हें चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. गोद में रखकर खड़ा अथवा कन्धे का सहारा लेकर बजाये जाने वाले वाद्य–इसराज, सारंगी आदि।
2. वाद्य का सम्पूर्ण अथवा उसका केवल एक भाग गोद में रखकर बजाये जाने वाले वाद्य–स्वरमण्डल, तंजोरी वीणा आदि।
3. गोद में तिरछा रखकर बजाये जाने वाले वाद्य–सितार, सरोद, स्वर बहार, सुर सिंगार, रवाब, रूद्र वीणा आदि।
4. सामने रखकर बजाये जाने वाले वाद्य–शन्तूर कानून पियानो, आदि।

तत् वाद्यो की भाँति अवनद्ध वाद्यो को भी वादन क्रिया तथा बनावट की दृष्टि से कई उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है। वादन क्रिया के आधार पर अवनद्ध वाद्यो को 5 उपवर्गों में विभाजित किया जाता है–

1. दोनों हाथों के पंजों तथा उँगलियों से बजाये जाने वाले वाद्य–पखावज, मृदंगम, तबला, ढोलक आदि।
2. एक हाथ की उँगलियों से बजने वाले वाद्य–हुडुक, खंजरी, आदि।

Scanned with CamScanner

3. शंकु से बजाये जाने वाले वाद्य—नगाड़ा, धौंसा आदि।
4. एक ओर हाथ तथा एक ओर डण्डी से बजाये जाने वाले वाद्य—बड़ा ढोल, पटह आदि।
5. घुंडी की चोट से बजाये जाने वाले वाद्य—डमरू, ढक्का आदि।

बनावट की दृष्टि से अवनद्ध वाद्यो के 4 उपवर्ग किये जा सकते हैं।

1. भीतर से खोखले तथा दोनों मुखों पर मढ़े हुए वाद्य—भरतकालीन मृदंग के तीनों रूप—गोपुच्छा, यवाकृति, हरीतकी, ढोल, ढाक, डमरू, हुडुक आदि।
2. भीतर से खोखले एक मुखी वाद्य—अर्ध गोपुच्छा, अर्ध यवाकृति, अर्ध हरीतकी, तबले के दोनों भाग, घट, नक्कारा, नगड़िया आदि।
3. भीतर से खोखले दोमुखी वाद्य किन्तु एक ही मुख मढ़ा रहता है—अफ्रीका तथा पाश्चात्य देशों के वाद्य।
4. चार से छः अँगुल लकड़ी की चौड़ी पट्टी में गोल आकृति में एक ओर चमड़ा मढ़ा रहता है—चंग, डफ, करचक्र, खंजरी आदि।

तत्, अवनद्ध वाद्यो की भाँति सुषिर वाद्यो में वादन क्रिया के आधार पर—

1. मुँह से फूँक कर बजाये जाने वाले वाद्य—वंशी, मुरली, शहनाई आदि।
2. हवा के दबाव से बजाये जाने वाले वाद्य—हारमोनियम, स्वरपेटी आदि।

बनावट के आधार पर सुषिर वाद्यो के छः उपवर्ग किये जा सकते हैं।

1. सादे बने हुए वाद्य—वंशी, मुरली आदि।
2. पत्तीदार सादे वाद्य—शहनाई, नागस्वर आदि।
3. पत्तीदार तथा चाभीदार वाद्य—क्लारियोनेट, सेक्सोफोन आदि।
4. फूँकने वाला मुख सामान्य तथा दूसरी ओर का मुख बाहर की ओर फैला हुआ वाद्य—शहनाई, नागस्वर आदि।
5. घुमावदार बने हुए वाद्य—अधिकांशतः भारतीय बैन्ड पार्टियों के प्रयोग में लाये जाने वाले वाद्य, ट्रम्पेट आदि।
6. रीड लगे हुए वाद्य—हारमोनियम, हारमोनिका, स्वरपेटी आदि।

धन वाद्यो में केवल वादन क्रिया के आधार पर केवल तीन उपवर्ग हो सकते हैं—

1. वाद्य के दोनों हिस्सों को परस्पर टकराकर ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य—झाँझ, मंजीरा, करताल आदि।
2. डण्डी, लकड़ी या हथौड़ी से प्रहार कर बजाये जाने वाले वाद्य—घण्टा, जयघण्टा, विजयघण्टा, गाँग, गेमलन, बड़ी झाँझ आदि।
3. हिलाकर बजाये जाने वाले वाद्य—झुनझुना रम्भा आदि।

बनावट की दृष्टि से घन वाद्यो के उपवर्गों की अनगिनत संख्या होगी अतएव इनको उपवर्गों की सीमा में बाँधना असम्भव नहीं तो दुष्कर कार्य अवश्य होगा।

Scanned with CamScanner

समय परिवर्तनशील है अतएव नित नये-नये वाद्यो के सृजन व उनके प्रचलन के कारण वाद्यो के वर्गीकरण में भी नये-नये संशोधन एवं परिवर्तन करने पड़ते हैं इनको किसी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। प्राचीन काल में जहाँ भरतकालीन वाद्यो को चार वर्गों में विभाजित किया। वही आगे चलकर वाद्यो को कभी तीन, पाँच तथा छः वर्गों में विभाजित करने की परम्परा चल पड़ी। देश में ही नहीं विदेशों में भी इस क्षेत्र में नये-नये परिवर्तन होते रहे हैं। चीन में वाद्यो को आठ वर्गों में विभाजित किया गया तथा उनके विभाजन का आधार ध्वनि उत्पादक सामग्री थी। इसी प्रकार अन्य पाश्चात्य देशों में वाद्यो के तीन वर्ग–तन्त्री वाद्य (String Instruments) हवा के वाद्य (Wind Instruments) तथा प्रहार के वाद्य (Percussion Instruments) जिनमें घन तथा अवनद्ध दोनों प्रकार के वाद्य शामिल किये गये।

Scanned with CamScanner